International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 26-28

हिन्दी में ललित निबन्ध लेखन परम्परा : परिचयात्मक विवेचन

डॉ0 रमेश चन्द्र
प्रवक्ता, राइ0का0का0 छोई, पो0 छोई, रामनगर, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत।

सारांश
पाश्चात्य एवं भारतीय साहित्य में ललित निबन्ध लेखन परम्परा उदारवादी विचारधारा के काल में चरमोत्कर्ष पर पहुंची क्योंकि उदारवादी विचारधारा जहां अपनी दृष्टि को सम्मान करती है वहीं दूसरों की दृष्टि का भी सम्मान करती है तथा दूसरों की दृष्टि से देखे गये सत्य को स्वीकार करती है। पाश्चात्य साहित्य के साथ–साथ हिन्दी साहित्य में निबन्ध के विकास में यह उदारवादी दृष्टि महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। पश्चिमी सम्पर्क से उत्पन्न एवं उदारवाद से प्रेरित होकर ललित निबन्ध विधा हिन्दी में अवतरित हुई तथा इस विधा में मानवीय चिन्तन व वैचारिक स्वच्छन्दता को विशेष महत्व दिया जाता है। इस मनोवृत्ति में पत्रकारिता को, पत्रकारिता ने निबन्ध को प्रभावित एवं प्रेरित किया। भारतीय गद्य साहित्य के अभ्युत्थान काल में अनेक उदारवादी लेखक पत्रकार भी थे। ललित निबन्धकला का पाश्चात्य एवं भारतीय साहित्य में विवेचन करना इस शोध–पत्र का मुख्य प्रयोजन है।

मूल शब्द: उदारवाद, लालित्य, आत्मव्यंजकता, पत्रकारिता, आत्मप्रकाशन

प्रस्तावना
हिन्दी निबन्ध साहित्य पाश्चात्य निबन्ध साहित्य की तुलना में नया है। भारतेन्दु हरिशचन्द्र जिनका जीवन काल सन् 1850–1885 तक सीमित रहा, हिन्दी गद्य के जनक माने जाते हैं। हिन्दी गद्य के अस्तित्व में आने के उपरान्त ही निबन्ध, नाटक, उपन्यास तथा कहानी जैसी लोकप्रिय विधाओं का जन्म हुआ। हिन्दी में ललित निबन्ध विधा के त्वरित विकास में पाश्चात्य सभ्यता से उत्पन्न उत्तेजना के साथ ही ''भारतेन्दु युग में सबसे अधिक सफलता निबन्ध लेखन में प्राप्त हुई। निबन्धों का सम्बन्ध पत्र पत्रिकाओं से सीधे जुड़ा हुआ था। लेखकों के सामने अनन्त विषय थे। राजनीति, समाज–सुधार, धर्म अध्यात्म, आर्थिक दुर्दशा, अतीत का गौरव, महापुरूषों की जीवनियाँ आदि। भारतेन्दु युग के लेखकों ने विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से निबन्ध साहित्य को खूब समृद्ध किया।[1] हिन्दी में गद्य के अस्तित्व में आ जाने, पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन तथा विषयों की विवधता निबन्धों की समृद्धि की दृष्टि से उल्लेखनीय सिद्ध हुई।

हिन्दी में ललित निबन्ध का प्रारम्भिक रूप व्यक्तिनिष्ट निबन्ध अर्थात आत्मव्यंजक निबन्ध को माना जाता है। ललित निबन्ध में लेखक के लिए बन्धनमुक्त होकर आत्मप्रकाशन करने का अवकाश अधिक रहता है। अतः निबन्ध के जिस रूप में यह विशेषता अधिक रहती है उसे ललित निबन्ध कहा जा सकता है। आत्म प्रकाशन या आत्मप्रदर्शन ललित निबन्ध की प्रमुख विशेषता है। ललित निबन्ध में निर्वैयक्तिकता सम्भव नहीं है। यह निबन्धकार के चिन्तन, मनन और स्वानुभूति का व्यक्त रूप है। प्राचीन संस्कृत परम्परा के अनुसार निबन्ध केवल बौद्धिक अभिव्यक्ति का माध्यम था, लेकिन आज उसका स्वरूप परिवर्तित हो गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन है कि ''आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के अनुसार निबन्ध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्व अर्थात व्यक्तिगत विशेषता हो। व्यक्तिगत विशेषता का यह मतलब नहीं कि उसके प्रदर्शन के लिए विचारों की श्रृंखला रखी ही न जाय या जानबूझ कर जगह–जगह तोड़ दी जाय।''[2] अतः कह सकते हैं कि ललित निबन्ध में आत्मप्रदर्शन का गुण अनिवार्य रूप से होना चाहिए। डॉ0 रमेश चन्द्र लवानियां के विचार हैं कि ''वैयक्तिक निबन्धों को ललित निबन्धों के नाम से पुकारा जाता है। इस विधा को निबन्धों का एक प्रकार माना जाता है किन्तु निबन्ध की वास्तविक विधा ललित निबन्ध ही है। इसमें लेखक निर्द्वन्द होकर अपने विचारों को लिपिबद्ध करता है। किन्तु इसे अहंकार नहीं माना जा सकता।''[3] साथ ही ''आत्मव्यंजक निबन्धों में लेखक अपनी अनुभूति एवं कल्पना के द्वारा जीवन की आलोचना करता है, ऐसा करने में वह किसी सिद्धान्त का आश्रय नहीं लेता। सिद्धान्त का आश्रय लेते ही आत्मव्यंजक निबन्ध की मर्यादा नष्ट हो जाती है। उसमें जीवन की आलोचना सूक्ष्म एवं गहरी होती है। विनोद उसका सहचर है। बिना विनोद के आत्मव्यंजक निबन्ध सफल नहीं होते।''[4] डॉ0 बालेन्दुशेखर तिवारी का मत है कि ''शब्द, अर्थ और विचार सभी स्तरों पर लालित्य का संयोजन करने वाले निबन्ध ही ललित निबन्ध हैं।''[5] डॉ0 हरिमोहन कहते हैं कि ''हिन्दी में निबन्धों का एक और प्रकार 'ललित निबन्ध' नाम से स्वीकृत है। वस्तुतः यह व्यक्ति प्रधान, व्यक्तित्व प्रधान अथवा व्यक्तिगत आत्मपरक लघु गद्यखण्ड है, इसमे काव्यात्मक भाषा का प्रयोग होता है। कल्पना की प्रवणता और मन की उन्मुक्त भटकन ललित निबन्ध की अन्य महतवपूर्ण पहचान है। यह गद्य काव्य में सन्निकट है। मन की मौज, फक्कड़पन, अखण्ड विश्व दृष्टि, सामान्य में निगूढतम वैशिष्ट्य की तलाश ललित निबन्ध के अनिवार्य तत्व हैं।''[6] इस प्रकार ललित निबन्ध विधा ''बुद्धि को सोचने के लिए, मन को अनुभव करने के लिए परिवेश को संस्कारित करने के लिए, एक साथ बाध्य करती है। यह मनुष्य के सांस्कृतिक अनुभवों को ऐसी चित्रशाला है, जिसमें लालित्य और गम्भीर्य का विलक्षण समन्वय है।''[7]

पाश्चात्य विद्वानों ने किसी भी प्रकार के सृजनात्मक लेख/रचना को ललित निबन्ध माना है। निबन्ध के जन्मदाता माङतेन निबन्ध में व्यक्तिव्यंजकता को मुख्य मानते हुए आत्मव्यंजना व आत्मप्रशंसा, आत्मप्रदर्शन को ही ललित निबन्ध मानते हैं, उनका कहना है कि वे अपने निबन्धों के विषय स्वयं होते हैं। इस विधा में लेखक का व्यक्तित्व स्पष्ट आभाषित होता है। सार रूप में कालियर्स विश्वकोष की परिभाषा ''निबन्ध अपने–आप में पूर्ण एक बैठक में पढ़ी जाने

योग्य ऐसी गद्य रचना है जो गैर तकनीकी पद्धति पर वैयक्तिक दृष्टिबिन्दु को प्रधानता देते हुए निर्मित की गयी हो।''[8] श्री जयनाथ नलिन का मत है कि ''निबन्ध स्वाधीन चिन्तन और निश्च्छल अनुभूतियों का सरस, सजीव और मर्यादित गद्यात्मक प्रकाशन है।''[9] कुबेरनाथराय ललित निबन्ध के सन्दर्भ में कहते हैं कि ''विषय के आस–पास शिव के सांड की भाँति मुक्त चारण और विचरण ललित निबन्ध है।''[10] राय जी लालित्य का रस प्राप्त करने के लिए विषय के आस–पास उन्मुक्त विचरण को महत्व देते हैं क्योंकि उन्मुक्त विचरण से निबन्ध में लालित्य का गुण आ जाता है। इस प्रकार पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों की परिभाषाओं के आलोक में कहा जा सकता है कि ललित निबन्ध साहित्य का चरम बिन्दु है, जिसमें भावुक मन लालित्य के साथ अभिव्यक्ति पाता है तो उस निबन्ध में आत्मीय निजता, हृदयगत भावात्मकता वैयक्तिकता, स्वच्छन्दता सांस्कृतिकता, उन्मुकतता आदि की सुन्दर और लालित्यपूर्ण शैली में अभिव्यक्ति होती है।

प्रसंगानुसार यह संकेतित किया जा चुका है कि हिन्दी का निबन्ध साहित्य पाश्चात्य निबन्ध साहित्य की तुलना में नया है तथा हिन्दी में पाश्चात्य प्रभाव के फलस्वरूप यह विधा अस्तित्व में आयी। पाश्चात्य साहित्य में जहाँ ललित निबन्ध लेखन का प्रारम्भ–सत्रहवी शताब्दी में हुआ वहीं हिन्दी में इस विधा का शुभारम्भ उन्नीसवीं सदी में भारतेन्दु युग में हुआ। निबन्ध का जन्म और नामकरण फ्रांसिसी लेखक माङतेन (1533–1592) के साथ सम्बद्ध किया जाता है। इंग्लैण्ड में वैयक्तिक निबन्ध लेखक फ्रांसिस वेकन को पहला वैयक्तिक निबन्धकार माना जाता है।

डॉ0 कैलाश चन्द्र माथुर ने लिखा है कि ''इंग्लैण्ड में वैयक्तिक निबन्धों का आरम्भ सत्रहवीं शताब्दी के प्रख्यात लेखक सर टामस ब्राउन से माना जाता सकता है। इससे पूर्व सर फ्रांसिस वेकन ने माङतेन का अनुसरण करने का प्रयास किया किन्तु वे सफल नहीं हो सके थे। अपनी अत्यन्त अहंवादी प्रवृत्ति के कारण वे अपने व्यक्तित्व को सुचारू रूप से अपने निबन्धों में नहीं कर पाये और न पाठकों से एकात्मभाव स्थापित कर सके।''[11] श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी पाश्चात्य, ललित निबन्ध लेखन को उदारवादी विचारधारा से जोड़ते हैं। इंग्लैण्ड में टामस ब्राउन क्लरैण्डन, एब्राहम काऊले, विलियम टेम्पल, गोल्ड स्मिथ, लेहण्ट, विलियम हेजलिट, चार्ल्स लैम्ब, आदि ने इस विधा को उत्कर्ष प्रदान किया। फ्रांस में माङतेन के बाद मौन्तल, कालदीना लदरी, बालजा, पाश्काल शैशेफैकोड आदि ने आगे बढ़ाया। अमेरिका में जोनसन एडवर्ड्स, जानबुलमैन, पार्कर विलिस, विलियम गेलार्ड क्लार्क, एमरसन, बारनर व कोल्वी आदि ने ललित निबन्ध परम्परा को गति प्रदान की। पाश्चात्य साहित्य में ललित निबन्ध लेखन के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि वैयक्तिक निबन्ध लेखक परम्परा फ्रांस में माङतेन से प्रारम्भ होकर फ्रांस से अधिक इंग्लैण्ड व अमेरिका के साहित्य में उत्कर्ष पर पहुंची। ललित निबन्ध की समृद्धि में पाश्चात्य निबन्धकारों ने उल्लेखनीय योगदान किया है।

भारतेन्दु युग में युगीन परिस्थितियों निबन्ध के विकास में सहायक सिद्ध हुई। यही कारण है कि हिन्दी निबन्ध साहित्य का प्रारम्भिक काल ही इसका उत्कर्ष काल भी है, जैसा कि ललित निबन्ध को परिभाषित करते हुए यह स्वीकार किया जा चुका है कि इसके लिए विषय का कोई बन्धन नहीं होता, निबन्धकार ललित शैली में स्वच्छन्द रूप से अपने व्यक्तित्व को अभिव्यक्ति देता है तथा निबन्ध में अन्तर्चेतना से लेकर सांस्कृतिक परिदृश्य तक सभी कुछ आ जाता है। निबन्ध विधा के उद्भवकाल से लेकर आधुनिक काल तक इन निबन्धों में वैयक्तिकता, विनोद प्रियता, सांस्कृतिकता, व्यंग्य, कथा भंगिमा बन्धुत्व एवं सख्यप्रधान टोन आदि विशेषताएं पायी जाती हैं, जिस लेखक के जीवनानुभव जितने व्यापक गम्भीर सरस एवं उच्च होंगे उसके द्वारा लिखा गया निबन्ध उतना ही ललित एवं हृदयग्राही होगा या जिस निबन्धकार का व्यक्तित्व जितना मौलिक होगा उसका निबन्ध उतना ही मौलिक, अभिनव और उच्चकोटि का होगा। भारतेन्दु युग या उत्थानकाल के सभी लेखक मौलिक व्यक्तित्व के धनी थे। इनके निबन्धों में लालित्य स्वतः ही आ गया। इस युग के प्रमुख ललित निबन्ध लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट एवं प्रतापनारायण मिश्र आदि हैं। द्विवेदीकाल हिन्दी निबन्ध विधा का विकासकाल है। परन्तु भारतेन्दु युग जैसी वैयक्तिकता इस युग में नहीं दिखाई देती हैं। इस युग में सक्रिय रहे महान ललित निबन्धकार बालमुकुन्द गुप्त ने ललित निबन्ध को उत्कृष्टता प्रदान की। इनके निबन्धों के बारे में कहा जा सकता है कि इन निबन्धों का प्राणतत्व भारतेन्दु युगीन तथा शरीर द्विवेदी युगीन है। संस्कृति के अनन्य उपासक, आचार व्यवहार से पुरातन प्रेमी होते हुए भी विचारों में स्वच्छन्द एवं प्रगतिशील बाबू बालमुकुन्द ने देशवासियों में देशप्रेम को उद्दीप्त करने व जनकल्याण हेतु ललित निबन्धों की रचना की, उनके व्यंग्यपूर्ण निबन्धों को पढ़कर अंग्रेज शासक तिलमिला जाते थे। वे तोप का मुकाबला अखबार से करते थे। द्विवेदी युग के अन्य निबन्धकार माधव मिश्र, अध्यापक पूर्ण सिंह, पद्मसिंह शर्मा आदि हैं।

विस्तार काल या शुक्ल युग में ललित निबन्धकार के रूप में हमारे सामने पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी व सियारामशरण की सरलता से युक्त आत्मीयता उनकी शैली को विशेष रूप से प्रीतिकर बना देती है। निबन्धकला रोमांटिसिज्म के आधारभूत सिद्धान्तों के अनुकूल भव्यता के स्थान पर निकटता के भाव को महत्व देती है। इस दृष्टि से बख्शी व सियारामशरण की कला अप्रतिम है और पाठक को सहज ही अपनी ओर आकृष्ट करती है।''[12] इस युग के अन्य प्रतिनिधि निबन्धकार हरिभाऊ उपाध्याय, वियोगी हरि, चतुरसेन शास्त्री, लाला भगवानहीन, शान्तिप्रेम द्विवेदी, डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल, जैनेन्द्र कुमार आदि हैं।

आधुनिक काल या शुक्लोत्तर काल में ललित निबन्ध विधा का उल्लेखनीय विकास हुआ। इस सन्दर्भ में यह कहना उचित प्रतीत होता है कि ''निबन्धकार के निबन्ध को वैचारिक स्तर पर ही नहीं अपितु वैयक्तिक स्तर पर भी लिखने के लिए नवीन शैली और नवीन मुद्रा अपनायी है तथा अपनी मौलिकता के लिए बड़ी ईमानदारी से आत्मचिन्तन किया है। परिमाणतः एक सदी की अवधि में ही हिन्दी निबन्ध के विविध स्तरों पर अपनी मौलिकता, शैलीगत वैभिन्य और व्यंजकता चरितार्थ की है।''[12] इस युग में ललित निबन्ध को उत्कर्ष पर पहुंचाने वाले प्रमुख निबन्धकार हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्या निवास मिश्र, भगवतशरण उपाध्याय, गुलाबराय, प्रभाकर माचवे, धर्मवीर भारती व कुबेरनाथ राय आदि हैं।

ललित निबन्ध लेखन परम्परा परिचयात्मक विवेचन के अन्तर्गत उपयुक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि हिन्दी ललित निबन्ध का जन्म पाश्चात्य साहित्य में सत्रहवीं शताब्दी से प्रारम्भ होकर हिन्दी साहित्य में उन्नीसवीं शताब्दी में भारतेन्दु युग से लेकर आधुनिक युग तक इस विधा, गद्य के उद्भव काल में ही खूब फली–फूली और उत्तरोत्तर गद्य के अन्य कालों जैसे उत्थानकाल विस्तरण काल व आधुनिक काल में उन्नति करती जा रही है।

निष्कर्षतः यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि हिन्दी साहित्य में हिन्दी ललित निबन्ध का भविष्य उज्जवल है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, सम्पादक डॉ0 नगेन्द्र, लेखक

रामचन्द्र तिवारी, पृष्ठ 475
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ 605–606
3. साहित्य विविधा : डॉ0 रमेश चन्द्र लवानियाँ, पृष्ठ 11
4. निबन्धकला – राजेन्द्र सिंह गौड़, पृष्ठ – 80
5. ललित निबन्धकार कुबेरनाथराय : सम्पादक0 डॉ0 माहेश्वरी, लेखक बालेन्दुशेखर तिवारी, पृष्ठ–17
6. प्रतिनिधि हिन्दी निबन्धकार : लेखक डॉ0 हरिमोहन, पृष्ठ 15
7. ललित निबन्धकार कुबेरनाथराम, सम्पा0 डॉ0 माहेश्वरी, लेखक बालेन्दुशेखर तिवारी, पृष्ठ–17
8. हिन्दी वाङमय : बीसवीं सदी, सम्पा0 डॉ0 नगेन्द्र, लेखक यजचन्द्र राय, पृष्ठ 343
9. हिन्दी निबन्धकार, लेखक श्री जयनाथनलिन – पृष्ठ 10
10. दृष्टि अभिसार : कुबेरनाथ राय, पृष्ठ 03
11. पाश्चात्य निबन्धकला : डॉ0 कैलाशचन्द्र माथुर – पृष्ठ 12
12. समसामयिक हिन्दी साहित्य, सम्पा0 डॉ0 बच्चन, लेखक रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृष्ठ– 23
13. निबन्धावली सम्पा0 – प्रकाश नारायण दीक्षित, पृष्ठ 19